अजायब बानी

मासिक पत्रिका

सितम्बर-2023

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2023-2025
Published on 08th Sept. 2023, Posting at RMS, Sri Ganganagar on 10th or 11th Sept. 2023

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–इक्कीसवां	अंक–पांचवां	सितम्बर–2023

बाबा जी आपको जन्मदिन की लख-लख बधाईयां

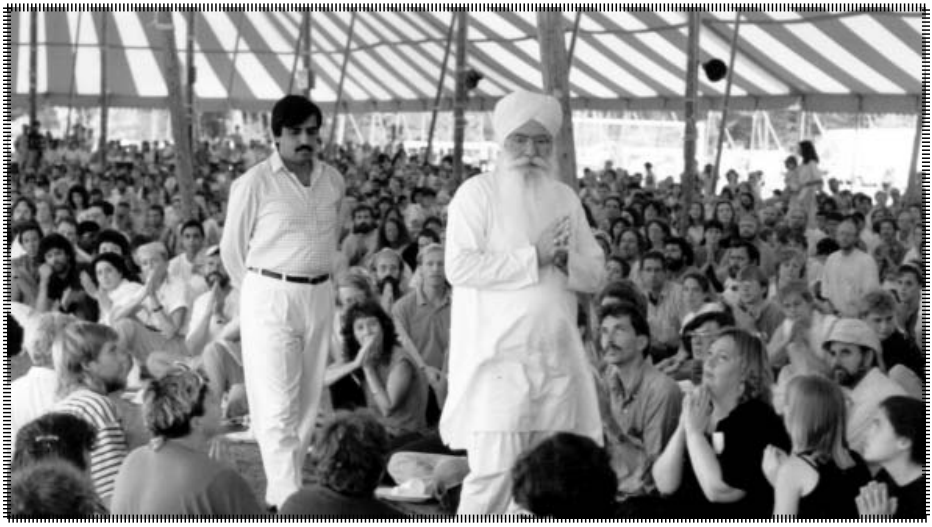

4 **इक जोत निराली आई** (एक शब्द)
17 **मन बहुत जबरदस्त है** (सतसंग)
5 **सतगुरु मेरा सदा सदा** (सवाल–जवाब)
31 **डायरी की महानता**
34 **धन्य अजायब**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकाम ऑफसेट, नारायणा, फेस–1, नई दिल्ली–110 028 से छपवाकर सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335039 जिला–श्रीगंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। 99 50 55 66 71

विशेष सलाहकार – **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक – **नन्दनी** सहयोग – **डॉ. सुखराम सिंह नौरिया**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 258 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

इक जोत निराली आई

इक जोत निराली आई, दुःखियां दा बने सहाई
दर्द मिटावण नूं, जी, नाम जपावण नूं, x 2

1 जद कूड़ दी मस्या आऐ, सच छिप जांदा ऐ,
जद जुल्म दे बद्दल ओण, धर्म कुमलौंदा ऐ x 2
जद मौज प्रभु दी आऐ, ओह जाहरी कला दिखाऐ
जुल्म हटावण नूं, जी, नाम जपावण नूं,
इक जोत निराली.....

2 ओह सब दा सांझीवाल, ते नाम जपौंदा ऐ,
मन हुक्म गुरु दा अमृत जाम, पिलौंदा ऐ, x 2
ओह बंदा बणके आया, सच्चखंड दा भेद बताया
मिलके सावन नूं, जी, नाम जपावण नूं,
इक जोत निराली.....

3 असीं जन्म-जन्म दे मैले, उज्जल करौंदा ऐ,
बण रूह दा धोबी आप मैल नूं, लौहंदा ऐ, x 2
साडी पेश ना कोई जावे, ओह हरदम ही समझावे
रस्ते पावण नूं, जी, नाम जपावण नूं,
इक जोत निराली.....

4 पिता हुक्म सिंह दा प्यारा, नूर इलाही ऐ,
गरीब 'अजायब' चाहे सहारा, होऐ सहाई ऐ, x 2
मिलके है संगतां आईयां, गुलाब देवी नूं देयो वधाईयां
भंडारा कृपाल मनावण नूं, जी, नाम जपावण नूं,
इक जोत निराली.....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक प्रेमी के सवाल का जवाब

सतगुरु मेरा सदा सदा ना आवै ना जाइ

08 जनवरी 1994 मुम्बई

परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने खुले दिल से हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया। मैं बताया करता हूं कि अगर भाग्य से पूरे महात्मा मिल जाएं तो हमें मन–इंद्रियों का साथ छोड़कर उनके साथ सच्चे दिल से प्यार करना चाहिए, दुनिया के मोह में कमी कर देनी चाहिए। अंदर लगातार नाम से जुड़े रहने के कारण सतगुरु के प्रति हमारा प्यार जाग जाता है, अंदर जाते समय हमें दुनिया की याद बिल्कुल भुला देनी चाहिए।

सतगुरु हमारी आत्मा को अंदर से ही उस 'शब्द' के साथ जोड़ देते हैं। आप बिना किसी झिझक और डर के अंदर चले जाएं, आप अकेले नहीं होंगे। जिन्होंने दया करके अंदर का मार्ग बताया है वे गुरुदेव मार्गदर्शन करते हैं, हमारी रहनुमाई करते हैं। हमारी आत्मा को जन्म–जन्म से जिस चीज़ की भूख है वह हमें अंदर से ही मिल जाएगी।

एक प्रेमी *: कई सतसंगियों ने यह किताबों में पढ़ा है और उन्होंने यहां तक तजुर्बा भी किया है कि जब पूरे गुरु माया के इस मंडल को छोड़कर हमेशा के लिए वापिस सच्चखंड चले जाते हैं तो यहां किस तरह के लड़ाई–झगड़े होते हैं। अगर हमने गुरु के स्वरूप को अपने अंदर प्रकट नहीं किया है तो उस समय हम किस तरह से नाम के अंदर दृढ़ और मजबूत रह सकते हैं?*

बाबा जी : हां भाई, आमतौर पर सतसंगियों के अंदर ऐसे सवाल चलते रहते हैं। जब ऐसी उलट–फेर होती है तो संगत में बहुत से प्रेमी घबरा जाते हैं, भटक जाते हैं। इतिहास इस बात का गवाह है कि सारी

संगत जायदाद के पीछे या गुरु बनने के लिए झगड़ा नहीं करती, न ही वे किसी किस्म का आडम्बर करते हैं और न ही किसी की निंदा करते हैं।

सच्चे पातशाह महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जब सन्त इस संसार में आते हैं, अपना सतसंग जारी करते हैं तो वहां हंस वृत्ति के जीव और काग वृत्ति के जीव भी आते हैं। परमात्मा ने हंसों को इस तरह की चोंच दी है जो दूध से पानी अलग कर देती है इसी तरह अच्छी आत्माएं जिनकी हंस वृत्ति होती है, उनमें विवेक होता है वे सच–झूठ का निर्णय कर लेते हैं और गुरु से गुरु मांगने ही आते हैं। जब गुरु चले जाते हैं, चाहे उनकी जायदाद को कोई संभाले या न संभाले वे भूलकर भी उनके पीछे लड़ते–झगड़ते नहीं। सिर्फ वही लोग लड़ते–झगड़ते हैं जो अंदर नहीं जाते, जिनका गुरु के साथ प्यार नहीं होता। वे यह नहीं समझते कि हम जो कुछ कर रहे हैं, यह सारा कीचड़ हमारे गुरु पर ही गिरेगा।

काग वृत्ति के जीव भी उनके चरणों में आते हैं क्योंकि सन्त बहुत दयालु होते हैं, गरीब नवाज होते हैं। सन्त चोरों, ठगों और जुआ खेलने वालों पर भी अपनी दया–मेहर करते हैं लेकिन वे लोग अपनी आदत से बाज नहीं आते। गुरु को पकड़ने की बजाए वे गुरु की जायदाद की तरफ देखते हैं कि कब गुरु शरीर छोड़ें और हम यहां गुरु बनकर बैठें। गुरु जिस तरह बोलते हैं, जैसे कपड़े पहनते हैं, जैसे बैठते हैं बाहरी तौर पर वे वैसी एक्टिंग–पोचिंग करना सीख लेते हैं।

मेरी जिंदगी की घटना है जो मैंने पहले भी कई बार संगत में बताई है। पिछले गांव में काफी पैसों से मेरा अच्छा मकान बना हुआ था। वह मकान सड़क के किनारे था, आते–जाते आम लोग वहां रुक जाते थे। मेरे बारे में कोई नहीं सोचता था सब उस मकान के बारे में ही सोचते थे। एक दिन एक मिलिट्री का अफसर वहां रूका। हमने उसे प्यार से खाना खिलाया। वह खाना खाकर, डकार मारकर कहने लगा, ''बाबा जी, मैं सोच रहा था

कि आपके पास काफी जायदाद है, अच्छा मकान है लेकिन मुझे आपका कोई वाली–वारिस नजर नहीं आ रहा, आप यह मकान किसे देंगे, जिंदगी का क्या भरोसा है?'' मैंने हंसकर उससे कहा, ''भाई, मैं तेरी ही इंतजार कर रहा था अगर तू यह मकान लेना चाहता है तो ले ले।''

कुछ दिन बाद दयालु गुरु कृपाल लम्बा सफर तय करके उसी मकान में आए क्योंकि यह मकान उनकी याद में ही बनाया था। यह अंदर से ही इशारा था कि तुझे कुछ मिलने वाला है इसलिए वे दया करके आ गए और उन्होंने मुझसे कहा, ''सन्त भी संसार में आकर एक गलती करते हैं। पहले यह गलती मेरे गुरुदेव ने की फिर मैंने की। मैं वहां मकान बनाकर खुश नहीं था, मैं तो जंगलों में रहना पसंद करता था, अब वही गलती तू कर रहा है। तू मेरे बैठे–बैठे ही इस मकान को छोड़कर 16 पी.एस. जाकर अपना भजन–अभ्यास कर, मैं वहां खुद ही आऊंगा।''और वे आते रहे हैं।

यहाँ बैठे हुए बहुत सारे प्रेमी एक बार नहीं बहुत बार 16 पी.एस. जाकर आए हैं। वह मकान कीमती नहीं, सिर्फ ईंट और मिट्टी से ही खड़ा किया हुआ है। हम ज्यादातर ईंटे और गर्डर 77 आर.बी. आश्रम का मकान तोड़कर लाए हैं। यह बात मैंने आपको इसलिए बताई है क्योंकि इस सवाल के साथ इसका खास ताल्लुक है।

जो लोग अंदर जाते हैं, कमाई करते हैं वे जानते हैं कि यह एक बहाना ही होता है, भ्रम ही होता है कि समय आने पर गुरु चोला छोड़ देते हैं। गुरु न किसी संसार से आते हैं और न जाते हैं। वे मालिक के हुक्म में आते हैं जिन रूहों को 'शब्द–नाम' के साथ जोड़ना होता है उन्हें जोड़कर अपने धाम चले जाते हैं। ऐसे सन्त सदा ही संसार में हैं। जब ओबरॉय साहब ने महाराज कृपाल से आखिरी समय में पूछा कि आपके बाद कौन काम करेगा? तो उन्होंने कहा, ''सच्चाई का बीज नाश नहीं होता, सच्चाई है।''

कुछ लोग गुरु के जाने के बाद आपस में झगड़ते हैं, पार्टियां बना लेते हैं, हम उनके बीच शामिल हो जाते हैं। हममें विवेक बुद्धि नहीं है और न ही उनके पास है। विवेक बुद्धि वह है जो सच–झूठ का निर्णय कर लेती है अगर उनके पास विवेक बुद्धि हो तो उन्हें यह भी पता होना चाहिए कि काल एक–एक निवाले का हिसाब मांगता है। जब हम खुद अंदर नहीं जाते, हमारी किसी मंडल तक चढ़ाई नहीं, कमाई नहीं, हम अपना बोझ नहीं उठा सकते और जिन्हें अपने पीछे लगा लेते हैं उनका बोझ कैसे उठाएंगे? कबीर साहब कहते हैं:

फूट्टी आख विवेक की लिखे न संत–असंत।
जाके संग दस–बीस है तिसका नाम महंत।।

जिसके पीछे डफली बजाने वाले और हलवा–मांडा खाने वाले ज्यादा लोग हो जाते हैं फिर वही झगड़े करवाते हैं। आप सबने महाराज कृपाल की हिस्ट्री पढ़ी है। उन्हें ज़ाती तौर पर मिलने वाले बहुत से प्रेमी यहां भी बैठे हैं। जब उनके गुरुदेव महाराज सावन सिंह जी इस संसार से सच्चखंड गए तो उन्होंने वहां कोई झगड़ा खड़ा नहीं किया। उस डेरे में उनका काफी अच्छा मकान बना हुआ था वे उसे भी नमस्कार करके छोड़ आए कि जहां गुरु नहीं है वहां रहकर क्या करेंगे? वे इतने उदास हुए कि कोई पार्टी बनाने की बजाए ऋषिकेश के जंगलों में चले गए। मुझे उनके नज़दीक होने का काफी मौका मिला है, उनके सपने में भी वहां की जायदाद नहीं आई। उन्होंने कभी किसी की निंदा नहीं की, उनके दिल में सबके लिए प्यार, इज्जत और जगह थी।

मिस्टर ओबरॉय की लिखी किताब बहुत से सतसंगियों ने पढ़ी होगी अगर नहीं पढ़ी तो पढ़कर तसल्ली कर लें। उस किताब में महाराज कृपाल और भाई सुंदर दास की एक खास कहानी है जिसे पढ़कर विवेकवान के कान खुल जाते हैं कि झूठी एक्टिंग–पोचिंग करने वालों की, झूठे गुरुओं की काल किस तरह अंदर बुरी हालत करता है, कष्ट देता है।

महाराज कृपाल और भाई सुंदर दास का यह संवाद किसी गुप्त जगह पर नहीं हुआ बल्कि बहुत से प्रेमियों के सामने हुआ था। जो प्रेमी ये संवाद सुन रहे थे उनकी आत्मा कांप रही थी कि किसी के साथ धोखा करने पर अंदर यह सजा मिल रही है। मुझे अच्छी तरह याद है कि उस समय वहां एक वकील भी था जो अब संसार छोड़ चुका है। वह खड़ा होकर कांपते हुए बोला, ''आज तक मैंने आपके बहुत से सतसंग सुने हैं, मुझे कभी डर नहीं लगा लेकिन आज आप खुद नहीं बोल रहे इस प्रेमी के मुँह से निकलवा रहे हैं, यह सब सुनकर मेरा दिल काँप रहा है। मैं तौबा करता हूं मुझे यकीन हो गया है कि काल भी कोई ताकत है और गुरु भी कोई ताकत है। हमारे सांस–सांस का हिसाब लेने वाला भी कोई है।''

ओबरॉय साहब बचपन से ही महाराज कृपाल के साथ रहे हैं, ये दोनों एक ही गांव के रहने वाले थे। इनके माता–पिता भी महाराज कृपाल से अपनी आत्मा के लिए हौंसला लेते रहे हैं, प्यार लेते रहे हैं। इन्हें महाराज कृपाल के बारे में सारा ज्ञान था कि वे दुनियावी जायदाद से नहीं बल्कि अपने गुरु हुजूर महाराज सावन से बंधे हुए थे। वे कहा करते थे, ''मैं डेरे से सिर्फ गुरु को ही लेकर आया हूं, मुझे गुरु की ही जरूरत थी।''

इस बारे में महाराज जी एक कहानी सुनाया करते थे कि एक राजा यूरोप चला गया, उसने वहां से अपनी रानियों को संदेश भिजवाया कि वे जो–जो वस्तुएं मंगवाना चाहती हैं वे लिख दें। रानियों को जिस हार–श्रृंगार की जरूरत थी रानियों ने वह लिख दी। उनमें से एक रानी ऐसी थी जो सारी रानियों की नजरों में पागल लगती थी, उसने भी संदेश भेज दिया, ''महाराज जी, आपके साथ ही हार–श्रृंगार है, आपके साथ ही यह दुनिया रंगीली दिखती है, मुझे आपकी जरूरत है, आप आ जाएं।''

जब राजा वापिस आया तो जिस रानी ने जो–जो श्रृंगार मंगवाया था राजा ने उसके घर पहुंचा दिया और जिस रानी ने उसे मांगा था वह खुद

उस रानी के पास चला गया। अब हम इस कहानी से अंदाजा लगा सकते हैं कि जिस रानी के पास राजा चला जाए उसे हार–श्रृंगार की क्या कमी है जो उसका प्यारा पति राजा पूरी नहीं करेगा। इसी तरह प्यारेयो, जिसने गुरु को पकड़ लिया, गुरु को अपने अंदर प्रकट कर लिया, गुरु सारी बरकतें लेकर उसके अंदर बैठ जाते हैं, ऐसे शिष्य को बाहरी जायदाद मांगने या बाहरी जायदाद के लिए झगड़े करने की क्या जरूरत है।

हम सिख इतिहास में गुरु तेग बहादुर की कहानी पढ़ते हैं, जब गुरु हरिकृष्ण जी का आखिरी समय आया तो संगत के पूछने पर वे इतना ही कह पाए 'बाबा बकाला।' गुरु तेग बहादुर जी रिश्ते में बड़े थे, परिवार में उनके बाबा लगते थे। बस! इतना कहने की देर थी कि सोढ़ी फैमिली से सबने 'बाबा बकाला' जाकर अपनी–अपनी गद्दियां बना ली, बाबा बन गए, प्रचारक रख लिए क्योंकि हरिकृष्ण जी ने वहां का नाम लिया था। सच आखिर सच होता है, सूरज चढ़ जाता है उल्लू नहीं देखते तो सूरज का क्या कसूर है? इसी तरह जब सच प्रकट होता है फिर उसकी आलोचना भी चारों तरफ होती है लेकिन सच किसी की आलोचना नहीं करता।

अपने आपको प्रकट करने का यह एक बहाना ही था कि मक्खन शाह लुबाणा का जहाज समुन्द्र की लहरों में डूबने लगा, उसने उस वक्त फरियाद की कि इस वक्त अगर कोई गुरु नानक देव जी की गद्दी पर उनके जैसा है तो मेरी रक्षा करे। उसने लंगर के लिए पाँच–सौ मोहरें भेंट करने के लिए दिल में धारणा की। मक्खन शाह लुबाणा का जहाज किनारे लग गया। उसने पूछा कि इस समय गद्दी पर कौन है? किसी ने उसे बताया कि गुरु हरिकृष्ण जी 'बाबा बकाला' कह गए हैं।

मक्खन शाह लुबाणा जब बाबा बकाला आया तो उसने देखा कि वहां बाईस लोग गुरु बने हुए थे। उस वक्त गद्दी को 'मंजी' कहते थे। हर प्रचारक यही तारीफ कर रहा था कि यही असली हैं बाकी सब नकली हैं।

उसने सोचा कि अब कैसे पता चलेगा कि असली गुरु कौन है? सोच-विचार करके वह पांच-पांच मोहरें सबके आगे रखता चला गया। आखिर में जब वहां से चलने लगा तो उसने पूछा कि यहां कोई और गुरु भी है? किसी ने उसे बताया कि यहां एक तेगा कमला है, उसने गुफा बनाई हुई है वह अभ्यास करता है, बाहर तो कम ही आता है।

मक्खन शाह लुबाणा जब नीचे गुफा में गया तो उसने गुरु तेग बहादुर के आगे पांच मोहरें रख दी। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्त ऐसे चमत्कार नहीं दिखाते लेकिन कभी-कभी मौज में ऐसा कर जाते हैं।'' गुरु तेग बहादुर ने अपनी कमीज उठाई और कहा, ''देख, मेरी क्या हालत है, किस तरह तेरे जहाज के कील मेरे कंधो में चुभे हुए हैं। तूने लंगर में पांच सौ मोहरें देने की धारणा की थी और दे पांच मोहरें रहा है।''

आपको पता है कि जब किसी की खोई हुई चीज मिल जाए उसे कितनी खुशी होती है। इसी तरह जब शिष्य को गुरु मिल जाए तो उसकी खुशी संसारिक वस्तुओं से बहुत ऊपर होती है। मक्खन शाह लुबाणा ने छत पर चढ़कर पल्लू हवा में घूमाकर कहा, ''*गुरु लाधो रे, गुरु लाधो रे।*''

मक्खन शाह लुबाणा अच्छा शक्तिशाली आदमी था। उसने बाहर गुरु साहब का सतसंग लगवाया। उन दिनों सतसंग को 'दीवान' बोलते थे। सोढ़ियों में धीरमल सबसे ताकतवर था, उसके अंदर ईर्ष्या की आग भड़की कि अब हमारा हलवा-मांडा खत्म हो जाएगा, उसने गुरु तेग बहादुर पर गोली चला दी। मैंने यह जगह आंखों से देखी है क्योंकि हमारी आर्मी ब्यास में रही है, यह जगह ब्यास के पास ही है।

गुरु तेग बहादुर ने जायदाद के लिए झगड़ा नहीं किया, प्रोपेगैंडा करके लोग पीछे नहीं लगाए, वे अपना भजन-अभ्यास करते रहे। ईर्ष्या यहां तक बढ़ गई कि वे पंजाब छोड़कर असम की तरफ चले गए। वहां से वापिस आकर उन्होंने श्री आनंदपुर साहिब में जमीन खरीदकर आश्रम बनाया।

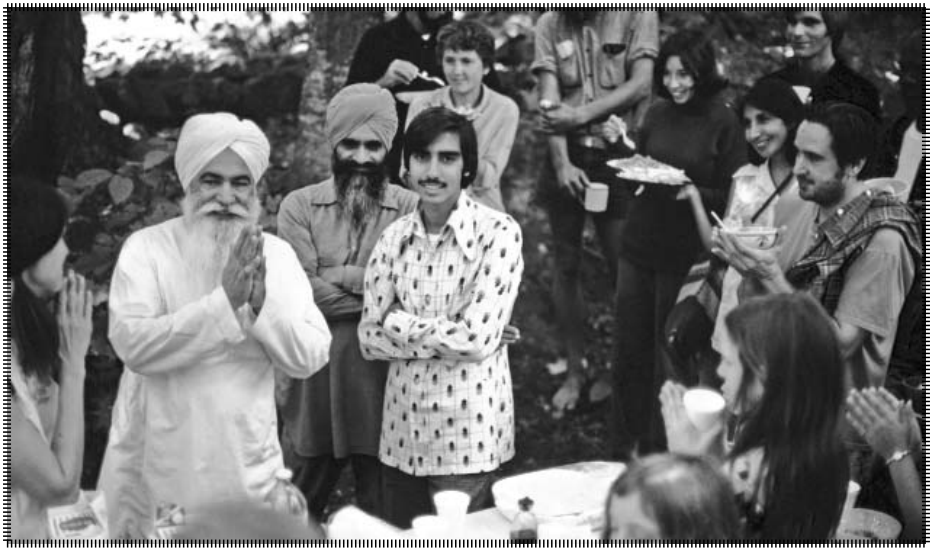

प्यारेयो, इस सवाल पर बहुत कुछ बोला जा सकता है। आपको महाभारत की एक छोटी–सी कहानी बता देते हैं। यह कहानी महाराज कृपाल के मुखारविंद से कई बार सुनी है। जब महाभारत का युद्ध होने लगा तो दुर्योधन और युधिष्ठिर भगवान कृष्ण के पास गए। दुर्योधन सिर की तरफ खड़ा हो गया, उसे राज दरबार और फौज का अहंकार था। पांडवों के पास नम्रता थी। पांडव कृष्ण के भक्त थे और उनकी अंदरुनी ताकत को समझते थे। युधिष्ठिर पैरों की तरफ नमस्कार करके खड़ा हो गया।

हम जब भी चारपाई से उठते हैं तो हमारी नजर सीधी पैरों की तरफ ही जाती है। दुर्योधन पीछे खड़ा था। कृष्ण ने युधिष्ठिर से पूछा, 'आ भाई युधिष्ठिर, कैसे आया है?' युधिष्ठिर ने कहा, ''मैदान–ए–जंग में सब तैयार है, आपके पास दया की विनती करने आए हैं।'' दुर्योधन ने कहा, ''यह बाद में आया है और आपने इसे पहले बुला लिया है।'' भगवान कृष्ण ने कहा, ''मैंने तुझे देखा नहीं, तू आकर पीछे खड़ा हो गया।'' दुर्योधन ने कहा, ''मुझे पहले ही पता था आप पांडवों का पक्षपात करते हैं।''

भगवान कृष्ण ने कहा, ''मैं पक्षपात नहीं कर रहा। मेरी आर्मी बहुत बड़ी है, मैं एक तरफ अपनी सारी आर्मी देता हूँ और दूसरी तरफ मैं खुद हूँ। अब तुम्हारी मर्जी है जो मांग लो।'' साथ में यह शर्त भी रख दी कि मैं जिस तरफ जाऊंगा हथियार नहीं उठाऊंगा, यह मेरी प्रतिज्ञा है।

उस वक्त लोग सत्यवादी थे जो कहते थे, उस पर पूरा अमल करते थे। युधिष्ठिर ने दुर्योधन से कहा, ''ले भाई, पहले तू मांग ले।'' दुर्योधन अंहकार में था उसने सोचा कि ये अकेले हैं, हथियार भी नहीं उठाएंगे, इनकी आर्मी बहुत बड़ी है, मैं आर्मी के सहारे जंग जीत लूंगा। दुर्योधन ने कहा, ''मुझे आर्मी चाहिए।'' युधिष्ठिर कृष्ण भगवान को लेकर अति खुश हुआ। अब आप अंदाजा लगा सकते हैं, महाभारत आपको याद भी है कि जीत पांडवों की हुई जहां कृष्ण भगवान थे।

इसी तरह जो अंदर जाते हैं, गुरु की शिक्षा पर अमल करते हैं वे गुरु को प्रकट करके गुरु को पकड़ लेते हैं, गुरु उनके पास हैं। दूसरे लोग जो जायदाद और दुनियावी चीजों की खातिर तड़पते रहते हैं वे सच्चाई से दूर चले जाते हैं। जब जायदाद बनाने वाले यहां नहीं रहे तो क्या हम रह जाएंगे? वक्त आने पर सबने वह जगह छोड़ जानी है। वही पलड़ा भारी रहेगा जो गुरु को पकड़ लेता है क्योंकि गुरु सदा हैं।

सतगुरु मेरा सदा सदा ना आवै ना जाइ।।

जिस पवित्र हृदय में गुरु प्रकट हैं, जिसने गुरु को चुना है वे गुरु के सच्चखंड पहुंचने के बाद न तो खुद निंदा करते हैं और न अपने सेवकों को किसी दूसरे की आलोचना करने देते हैं। यह उनकी सबसे बड़ी पहचान होती है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''ओछा आदमी अपनी सफाई पेश करता है और समझदार आदमी वक्त की इंतजार में होता है कि वक्त इसे खुद ही बता देगा।'' जिसके हृदय में पवित्र गुरु बैठे हैं वह लोगों की मैल धोकर निंदा की गंदगी अपने हृदय में नहीं डालेगा।

सच्चाई यह है कि जब तक गुरु देह में हैं, गुरु की तमन्ना होती है कि मेरे बच्चे मेरे जीवनकाल में पूर्ण हो जाएं, पीछे से भटके नहीं। यह हमारी भूल है कि हम उस वक्त की कद्र नहीं करते, कमाई नहीं करते। जिस तरह का प्यार गुरु के साथ होना चाहिए वह नहीं करते इसलिए हम भटक जाते हैं। दयालु गुरु फिर भी अपने सेवकों को नहीं भूलते, जो सेवक किसी खास कारण से कमाई नहीं करते, गुरु उन्हें भी देर–सवेर जरूर ले जाते हैं।

बाबा बिशनदास जी का आश्रम मेरी कमाई से ही बना था। उनका कोई और सेवक नहीं था जो उस आश्रम को संभाल लेता। वे जब शरीर में थे तब उन्होंने मुझसे कहा था, ''बेटा, मैं तुझे ईंटों से नहीं बांधना चाहता। मैंने तेरी कमाई सफल कर दी है, तेरा इस आश्रम पर कोई हक नहीं है। तू इंतजार कर जिसने तुझे वस्तु देनी है वह तेरे घर चलकर आएगा।''

मुझे उस जगह के कई लोगों ने आकर कहा कि इस जगह पर आपका हक़ है। मैंने उनसे कहा, ''नहीं, मेरा हक नहीं।'' उन लोगों ने कहा कि आप अपनी तरफ से किसी आदमी को मुकर्रर कर दें। मैंने कहा, ''नहीं, मेरे गुरुदेव बाबा बिशनदास जी का मेरे लिए ऐसा कोई हुक्म नहीं है।''

गुरु रामदास जी महाराज ने अपनी बानी में एक जगह लिखा है कि अगर सात समुन्द्र और सब वनस्पति के भार के बराबर सोना–चांदी रख दें और मालिक के प्यारों से पूछें कि तुमने गुरुदेव लेने हैं या यह माया लेनी है? गुरु रामदास जी ने कहा कि नहीं, वे गुरु का प्यार ही मांगते हैं।

हर मांगे हर रस दीजै।

गुरु रामदास जी यह भी कहते हैं:

माया माया के जो अधिकाई विच माया पचै पचीजै।

माया के प्यारों को तृप्ति नहीं आती, वे भूखों की तरह और मांगते हैं।

भुखिआ भुख न उतरी जे बन्ना पुरिआ भार।

उन्हें चाहे सारी दुनिया और सारी वनस्पति का भार बांध दें फिर भी उनकी भूख कभी नहीं मिटती। सन्तों की इच्छा होती है कि मेरे प्यारे बच्चे मेरे बैठे–बैठे ही पास हो जाएं।

अगर सारी क्लास पास हो जाती है तो एक दुनियावी अध्यापक की भी खुशी का ठिकाना नहीं रहता। मैं आपको अपनी जिंदगी में अपने अध्यापक की खुशी की कहानी बताता हूं। जब मैंने नौशेरा में वायरलैस का काफी मुश्किल इम्तिहान पास किया उस वक्त एक अंग्रेज अफसर हमारा इम्तिहान ले रहा था। जब हमें पेपर दिए गए तो हमारा उस्ताद क्लास में घूमकर देख रहा था। मेरा उस्ताद मेरी कुर्सी के पीछे आकर खड़ा हो गया लेकिन मुझे पता नहीं था। जब उस अंग्रेज अफसर ने आवाज दी, साथ में उसने दो महीने की तनख्वाह भी इनाम में बोली कि इसके पूरे नंबर है, किसी जगह भी गलती नहीं है। मैंने उसके नीचे 'R' लिख दिया था कि मेरा पेपर राईट है।

उस अंग्रेज अफसर ने कहा, ''अगर मैं इसे फेल करना चाहूं तो फेल कर सकता हूं क्योंकि इसने पेपर के नीचे 'R' लिख दिया कि मेरा पेपर राइट है। इसे यह अधिकार नहीं था फिर भी मैं खुश हूं।'' उसके बोलते ही मेरे अध्यापक ने मेरी बगलों में हाथ डालकर मुझे कुर्सी पर खड़ा कर दिया, यह अध्यापक की खुशी थी।

आप देख लें, गुरु हमारे रुहानियत के अध्यापक हैं, उन्हें कितनी खुशी होगी अगर हम उनके बैठे–बैठे ही मन–इन्द्रियों की गुलामी से ऊपर उठकर नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आकर 'शब्द' के साथ जुड़ जाएं। इसलिए हमें चाहिए कि हम सन्तों के बताए हुए नाम के रास्ते पर चलें।

***

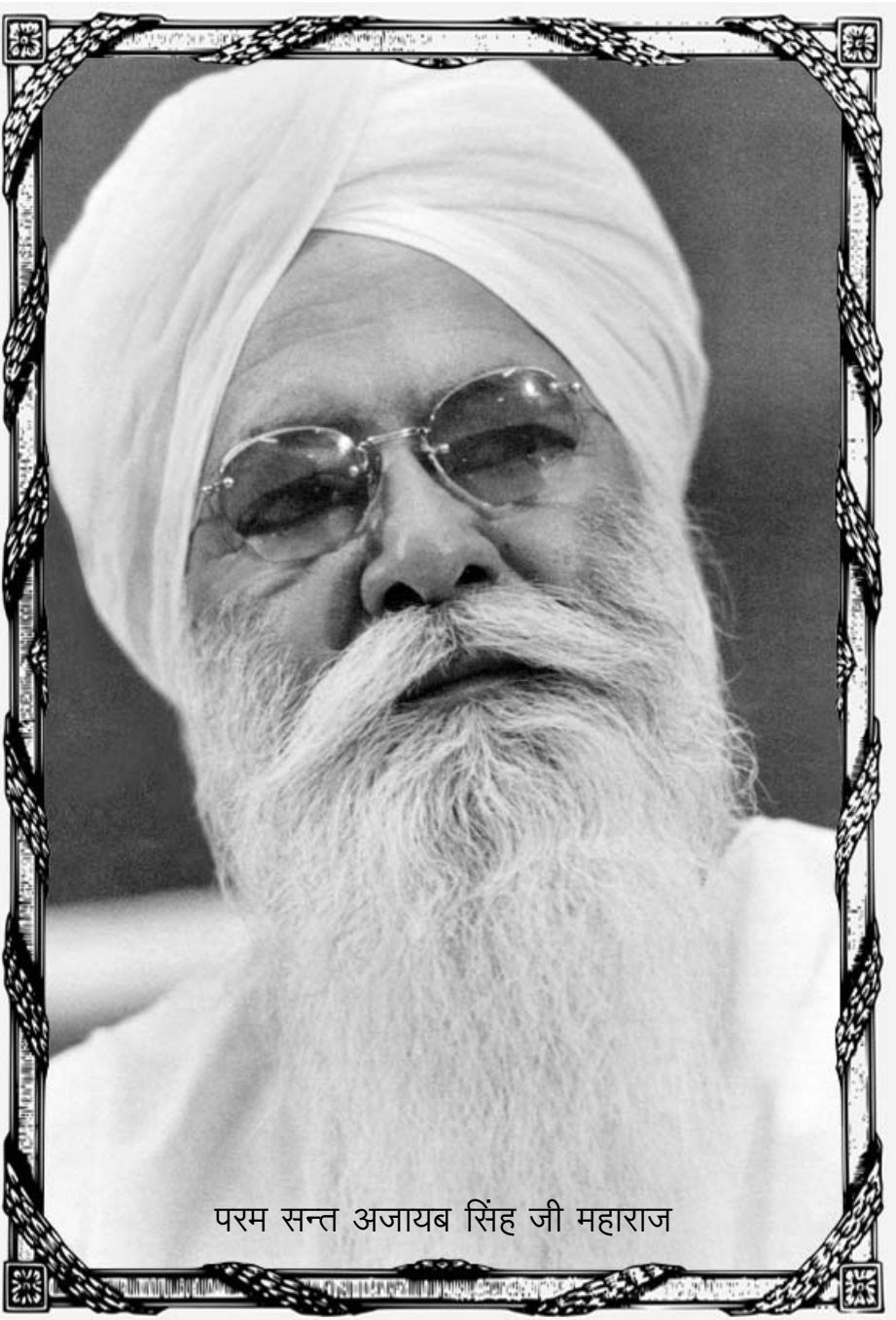

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मन बहुत जबरदस्त है

08 अगस्त 1980 स्वामी जी महाराज की बानी निनैमो–कनाडा

गुरु चरन बसे अब मन में। मैं सेऊँ दम दम तन में।।

राजा जनमेजय ने वेदव्यास से सवाल किया कि हमारे पूर्वज पांडव पाँचों भाई बहुत समझदार थे, कृष्ण भगवान उनके साथ रहते थे, वे हर प्रकार से उनकी मदद करते थे लेकिन उन्हें मन ने गलत रास्ते पर कैसे डाला? भाई–भाई आपस में क्यों लड़े? मुल्क का नुकसान क्यों किया? उन्होंने मन का कहना क्यों माना? वेदव्यास ने राजा जनमेजय से कहा, ''**मन बहुत जबरदस्त है**, इसने बड़े–बड़े ऋषि–मुनिओं को संसार में पटका कर मारा है, बड़े–बड़े लोगों को गलत रास्ते डाल दिया।''

जनमेजय ने कहा, ''मैं इस बात को नहीं मानता।'' वेदव्यास ने कहा, ''मैं तुझे बता देता हूं कि यह मन तेरे साथ क्या करेगा। आज से कुछ दिन बाद एक सौदागर आएगा, उसके पास घोड़े होंगे, उनमें एक घोड़ा बहुत अच्छा होगा जिसे तू खरीद लेगा। तू उस घोड़े पर चढ़कर पूर्व की तरफ जाएगा वहाँ तुझे एक औरत मिलेगी, तू उस औरत को महल में लेकर आएगा, उससे शादी करेगा। वह औरत तुझसे कहेगी कि शादी की खुशी में खाना खिलाना चाहिए, खुशी मनानी चाहिए। तू अच्छे–अच्छे ऋषि–मुनियों को खाना खिलाएगा। ऋषि–मुनि जंगल में रहने वाले होंगे उन्होंने कभी अच्छा खाना नहीं खाया होगा और औरत की शक्ल भी नहीं देखी होगी। वे खाना खाकर खुश हो जाएंगे, हंसेंगे। वह औरत तुझसे कहेगी कि ये मुझे देखकर हंस रहे हैं, ये बदमाश–लफंगे हैं। तू क्रोध में आकर कुछ नहीं सोचेगा, मन के कहने पर उन ऋषि–मुनियों का क़त्ल कर देगा जिसका

तुझे दंड मिलेगा, तुझे कुष्ठ रोग हो जाएगा। राजा जनमेजय, हमने तुझे सब कुछ बता दिया है अगर कोई उपाय है तो कर ले।''

अब राजा जनमेजय सोचता है कि मैं घोड़ा ही नहीं खरीदूंगा तो आगे कोई कहानी ही नहीं बनेगी। अगर घोड़ा खरीद लूंगा तो पूर्व दिशा में नहीं जाऊंगा, अगर पूर्व दिशा में चला भी गया तो औरत को घर नहीं लाऊंगा, अगर घर ले आऊंगा तो उसके साथ शादी नहीं करूंगा, अगर शादी कर भी ली तो उसके कहने पर अच्छे आदमियों को भोजन नहीं खिलाऊंगा अगर खिलाया भी तो मैं उन्हें नहीं मारुगा।

मालिक की मौज कुछ दिनों बाद वहां एक सौदागर आया। अहलकारों ने राजा जनमेजय से कहा, ''घोड़ा तबेले का श्रृंगार होता है, चाहे आप सवारी मत करना, कम से कम लोग इसे देखकर खुश होंगे कि हमारे राजा के पास बहुत अच्छा घोड़ा है।'' राजा ने उनके कहने पर घोड़ा खरीद लिया। कुछ दिनों बाद घोड़े के ट्रेनर ने कहा कि घोड़ा तैयार है, सरकार के चढ़ने के काबिल है, सरकार को चढ़ना चाहिए।

राजा घोड़े पर चढ़ा, घोड़ा बेकाबू हुआ और उसे पूर्व दिशा की तरफ ले गया। आगे एक औरत रो रही थी। राजा ने उस औरत से पूछा कि तू क्यों रो रही है? उस औरत ने कहा, ''मैं एक राजकुमारी हूं, तूफान आया था, मेरे माता–पिता मेरा साथ छोड़ गए हैं। राजा ने कहा, ''मैं तुझे लेकर नहीं जाता।'' उस औरत ने कहा, ''मुझे शेर खा जाएंगे। अगर तू मेरी जान नहीं बचाएगा तो तुझे पाप लगेगा।''

राजा तरस खाकर उस औरत को घर ले आया। घर आकर वह औरत कहने लगी, ''देख, तू मुझे घर ले आया है, मुझमें क्या कमी है? मैं अच्छी–भली हूँ, तू मेरे साथ शादी कर ले।'' मन अंदर से ही वकील की तरह पढ़ा देता है कि इसमें कोई नुक्स नहीं है। आखिर राजा ने उस औरत के साथ शादी कर ली। जब शादी कर ली तो उस औरत ने कहा

कि एक गरीब आदमी भी शादी की खुशी मनाता है। हम तो राजा हैं, हमें भी खुशी मनानी चाहिए। खुशी मनाने के लिए उन्होंने आम लोगों को और ऋषि–मुनियों को भी जंगल से बुलवाया। रानी खुद भोजन बरताने लगी।

ऋषि–मुनि अच्छा भोजन देखकर हंसे कि देखो, मालिक की लीला। हम तो फल–फूल खाकर गुजारा करते हैं, आज परमात्मा ने हमें इतना अच्छा खाना दिया है। उन ऋषि–मुनियों को हँसता देखकर रानी ने कहा, ''ये तो बदमाश–लफंगे हैं, मुझे देखकर हंस रहे हैं।'' राजा को क्रोध आया और उसने सबकी गर्दन काट दी।

इतने में वेदव्यास प्रकट हो गए और उन्होंने कहा, ''राजा! हमने तुझे कहा था कि **मन बड़ा जबरदस्त है**। अब देख तेरी क्या हालत है।'' राजा जनमेजय पछताता है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

राजा जनमेजा दे मतीं बरांज बिआसि पड़ाइआ।
तिनि करि जग अठारह घाए किरतु न चलै चलाइआ।।

राजा जनमेजय को वेद व्यास ने सब कुछ बता दिया था फिर भी वह मन के दांवपेच से न बच सका। यज्ञ भी किया, अठारह ऋषि–मुनियों का कत्ल किया जिसकी वजह से उसे कुष्ठ हुआ और वह पछताया।

रोवै जनमेजा खुइ गइआ, एकी कारणि पापी भइआ।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि हमारे मन में गुरु के चरण बस गए हैं। हम दिन–रात गुरु के चरणों के साथ लगे हुए हैं। मन से बचने का साधन और तरीका यही है कि हम गुरु चरणों के साथ लगे रहें। गुरु के साथ प्यार लगाए रखें, अपने अंदर गुरु के चरणों को प्रकट कर लें।

हम सन्तों के बाहरी चरणों को भी नमस्कार करते हैं क्योंकि शुरुआत देह से ही होती है। अगर शरीर धारण करके गुरु न मिले, हम गुरु के देह रूपी चरणों के साथ प्यार न करें तो हम अंदर पहुंच ही नहीं सकते। स्वामी जी महाराज और अन्य सन्तों का असली मकसद यह है कि हम

अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों पर्दे उतारकर अंदर जाएँ, वहाँ हमें गुरु चरण मिलेंगे। वहां जाकर हम माथा टेकें तो हमें पता चलता है कि गुरु के चरणों की क्या महिमा है, उनके अंदर क्या ताकत है? किस तरह हमारा मन ठहर जाता है।

फिर प्रीत लगी घट धुन में। चढ़ पहुंची पहिली सुन में।।

जब हम सन्तों के पास जाते हैं तो वे हमें 'शब्द–नाम' के साथ जोड़ देते हैं। जब हम फैले हुए ख्याल को सन्तों के कहे मुताबिक आंखों के पीछे लेकर आते हैं तो पहली मंजिल पर पहुंच जाते हैं, शब्द–धुन के साथ जुड़ जाते हैं। हमें शांति आ जाती है जो मन पहले धोखा देता था वह धोखा देने से हट जाता है, दुश्मनी छोड़कर मित्र बन जाता है।

अब सील क्षमा मन छाई। गइ तपन काम दुखदाई ।।

काम का वेग इंसान को पागल की तरह कर देता है। अगर हम सन्तों के कहे मुताबिक सिमरन के जरिए थोड़ा–सा भी अंदर चले जाएं तो काम से तप रहे जिस्म और हृदय में शीतलता आ जाती है, काम बाहर निकल जाता है और उसकी जगह शील आ जाता है।

फिर क्रोध लोभ भी भागे। अंहकार मोह सब त्यागे ।।

काम की जगह शील आ जाता है, क्रोध की जगह क्षमा आ जाती है, लोभ की जगह संतोष आ जाता है, मोह की जगह विवेक आ जाता है और अंहकार की जगह दीनता आ जाती है। विरोधी शक्तियां, काल शक्तियां अंदर से निकल जाती हैं और हमारे अंदर दयाल शक्तियां पैदा हो जाती हैं। कबीर साहब कहते हैं:

पांचों लरके मार कै रहै राम लिउ लाइ।

ये लड़के की शक्ल में आपके अंदर हैं। एक–एक करके आपको बताकर जाते हैं, काम कहता है कि मैं आज जा रहा हूं। क्रोध कहता है

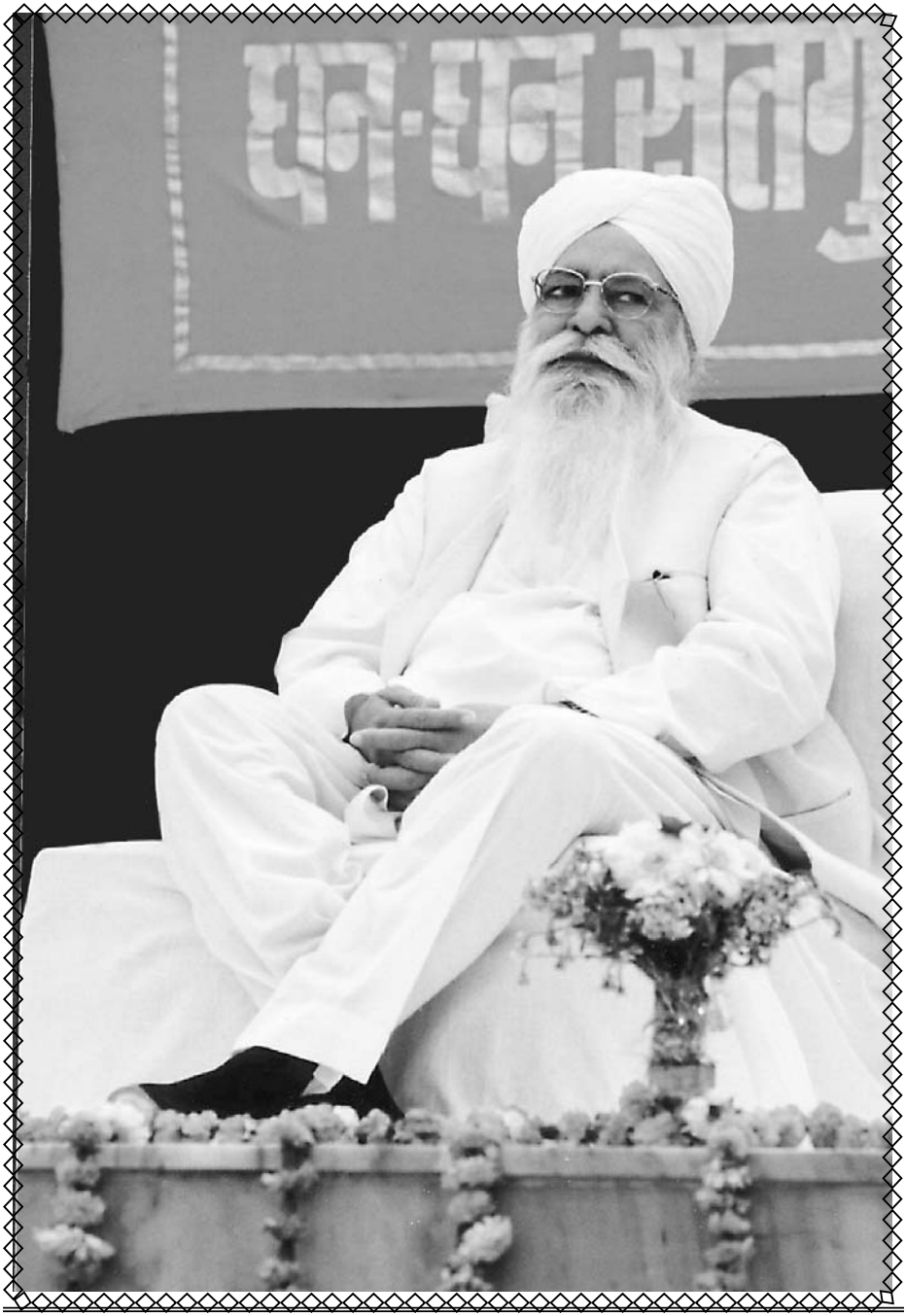

कि मैं आज जा रहा हूं। सारे आपको बताकर जाएंगे और आपका जिस्म रूपी शहर आबाद हो जाएगा। जितनी देर ये हमारे अंदर बैठे हैं उतनी देर ये इस शहर को आबाद नहीं होने देते, इस शरीर के अंदर सुख–शांति होने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। तुलसी साहब कहते हैं:

काम क्रोध लोभ मोह अहंकार दी जब लग घट में खान ।
क्या पंडित क्या मूर्खा दोनो एक समान।।

तुलसी साहब तो यहां तक कहते हैं:

सत बचन अधीनता पर तिर मात समान।
तांही को हर ना मिले तुलसी दास जमान।।

हम ज़िम्मेदारी लेते हैं अगर कोई इन चीजों से बचेगा तो वह परमात्मा से जरूर मिलेगा।

धुन पांच शब्द घट जागी। मन हुआ सहज बैरागी।।

जब हमारे अंदर धुन जाग जाती है, स्वाभाविक ही मन में वैराग आ जाता है। धुन सच्चखंड से उठकर भंवर गुफा, दसवां द्वार, त्रिकुटी और सहंसदल कमल से होकर हम सबके माथे के पीछे धुनकारे दे रही है, वहां किसी कौम या मजहब का सवाल नहीं है।

गुरु किरपा सूर उगाना। अब हुआ जगत बेगाना।।

जब हम उस धुन के साथ जुड़ जाते हैं तब हम गुरुकृपा के पात्र बन जाते हैं। गुरु तो कृपा अब भी कर रहे हैं लेकिन हम समझ नहीं रहे। फिर हमारे अंदर त्रिकुटी का सूरज उग जाता है, जब हम वहां पहुंच जाते हैं यह देश जिसे हम बहुत अच्छा समझते हैं, बेगाना लगने लगता है, फिर हम इसे किसी कीमत पर भी खरीदने के लिए तैयार नहीं होते।

घट बैनी तारी लाई। बाहर की किरिया दूर बहाई।।

जब गुरु कृपा से हमारे अंदर का सूरज उग जाता है, हमारी समाधि लग जाती है तो हम बाहर जो कर्मकांड पहले करते थे वे बिल्कुल छूट

जाते हैं। वे कर्मकांड हमें छिलके की तरह लगते हैं अगर हमें कोई यह कहे कि अब तू वे कर्मकांड क्यों नहीं करता तो वे इस तरह हैं जैसे बचपन में लड़कियां गुड्डे–गुड्डियों के साथ खेलती हैं लेकिन जब उनकी शादी हो जाती है तो दिल पति के चरणों में लग जाता है। फिर कौन उन गुड्डे–गुड्डियों को संभालकर रखता है।

गुरु अद्भुत सुख दिखलाया। क्या महिमा जाय न गाया।।

गुरु की पोजिशन और गुरु की दया का पता अंदर जाकर लगता है। वहां आत्मा जब अदभुत सुख देखती है तो उसे शांति आ जाती है। उस वक्त गुरु की महिमा याद आती है कि ओह! न गुरु ने मुझसे कोई फीस ली, न दुनिया ही छुड़ाई। गुरु ने मेरे ऊपर इतनी दया–मेहर की कि मैं यह सुख प्राप्त कर सकी।

जग जीव अभागी सारे। नर देही योंही हारे।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि ये अभागे जीव किसका भाग्य लाएँ? परमात्मा ने कृपा करके इंसानी जामा दिया, अपने साथ मिलाप करने का एक मौका दिया। हमने संवारना तो क्या था हम अपनी देह को भी बर्बाद करके चले जाते हैं। जो अपने ऊपर दया नहीं करता वह दूसरे पर कैसे दया कर सकता है?

अपने जीव की कुछ दया पालो, चौरासी का फेर बचालो।

भक्ति करना, खुद को सुधारना किसी के ऊपर एहसान करना नहीं है, यह तो हम अपने आप पर दया कर रहे हैं।

क्यों गुरु से प्रीत न करते। क्यों जम के किंकर रहते।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि गुरु के साथ प्यार करना क्या मुश्किल है? गुरु हमसे समाज नहीं छुड़वाते, बच्चे नहीं छुड़वाते, दुनियादारी नहीं छुड़वाते बल्कि यही कहते हैं कि सुबह उठें, दो घंटे अभ्यास में लगाएं और

मालिक के दरबार पहुंच जाएं, इसमें क्या मुश्किल है? हम गुरु से प्रीत नहीं करते इसलिए हम यम के गुलाम बन जाते हैं।

मैं किस से कहूं सुनाई। फिर अपना मन समझाई।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि मैं किसको कहूं, उस पर चलना तो क्या कोई सुनने के लिए तैयार नहीं। फिर मैं अपने मन को कहता हूं कि भाई, दुनिया जहां जाती है जाने दे। तू अभ्यास कर, गुरु को प्रकट कर, गुरु से प्यार कर। गुरु नानक साहब कहते हैं:

पापी करम कमावदे करदे हाए-हाइ।
नानक जिउ मथनि माधाणीआ तिउ मथे ध्रमराइ।।

तू गुरुमत दृढ़ कर भाई। अब छोड़ो तात पराई।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि मैं अपने मन से यही कहता हूं कि तू गुरुमत को दृढ़-विश्वास से पकड़। किसी से ईर्ष्या, वैर, जलन करना छोड़ दे। हमारा फर्ज है कि हम अपने अवगुण देखें और दूसरों के गुण देखें। सन्त-महात्मा हमेशा अपने अवगुण देखते हैं और दूसरों के गुण देखते हैं लेकिन दुनिया इससे उल्ट चलती है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

दोख पराया देखकर चलत हंसत-हंसत।
आपदा कबहू ना देखेया जिसका आद ना अंत।।

चल रह तू त्रिकुटी घाटी। चढ़ सुन्न शिखर की बाटी।।

आप कहते हैं कि जब हम सिमरन करते हैं, दुनिया के साथ ईर्ष्या छोड़ देते हैं तो सतगुरु हमारे साथ झूठा वायदा नहीं करते कि तुम्हें अगले जन्म में चढ़ाई कराएंगे। सतगुरु कहते हैं, ''तुम अभी त्रिकुटी चलो, दसवें द्वार में चलो, मैं आपको आँखों से दिखाने के लिए तैयार हूं।'' महात्मा हमें अंधविश्वास नहीं देते। महात्मा कहते हैं:

जो कुछ करना सो अभी करना, अग्गे दा ना भरोसा धरना।

महासुन्न की तोड़ो टाटी। जा भँवरगुफा की हाटी।।

आप कहते हैं कि तू महासुन्न का पर्दा फाड़कर भँवरगुफा में जा। वहां के बाजार, दुकानें और वहाँ की रौनक देख तो सही कि परमात्मा ने तेरे अंदर कैसे नजारे रखे हुए हैं।

मैं शुरू–शुरू में बग्गा परिवार में गया, उन्होंने मेरे ऊपर दया करके कहा कि आपको फिल्म दिखाकर लाएँ, 'जीवन ज्योति' बहुत अच्छी फिल्म है। मैंने उन्हें प्यार से कहा, ''आप मेरे कहने पर अंदर चलें फिर आप लोग बाहर की फिल्मों के मोहताज नहीं रहेंगे। आपके अंदर परमात्मा ने बहुत प्रकाश रखा हुआ है।''

फिर सतपुरुष घर पाया। धुन बीना जाय बजाया।।

वैसे तो सब महात्माओं ने बहुत खोलकर हमें बताया हैं लेकिन जितना तुलसी साहब और स्वामी जी महाराज ने खोलकर लिखा है इतना किसी और महात्मा ने नहीं लिखा। हिन्दुस्तान में उस वक्त अंग्रेजों का राज था, उन्होंने हर धर्म को खुली छूट दी हुई थी कि जैसा भी कोई चाहे खुले दिल से परमात्मा का यश बयान कर सकता है इसलिए इन महात्माओं ने बहुत खुलदिली से कलाम का इस्तेमाल किया है।

महाराज सावन सिंह जी भी कहा करते थे कि अंग्रेजों के राज की बहुत महिमा है कि हम खुला सतसंग कर रहे हैं अगर तानाशाही राज होता तो जैसे पिछले सन्त परखे गए, सूली पर चढ़ाए गए, हम भी परखे जाते। आजकल हिन्दूस्तान में डेमोक्रेसी है, संविधान भी ऐसा बना हुआ है कि हर आदमी अपने ढंग से भक्ति कर सकता है, हर एक को खुलदिली है।

जिस समय गुरु ग्रंथ साहिब लिखा गया, उस वक्त के बादशाह जहांगीर ने चार बार गुरु ग्रंथ साहिब को तलब किया लेकिन इसमें किसी धर्म की निंदा नहीं लिखी हुई थी।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि मैं भंवर गुफा से सतपुरुष के पास गया, वहां मैंने शब्द की आवाज बीन जैसी सुनी। सारे महात्मा उस बीन का जिक्र करते हैं। नामदेव जी भी कहते हैं:

अखंड मंडल निरंकार मे अनहद बीन बजावोगो। बैरागी रामे गावोगो।।

गुरु नानक साहब भी कहते हैं:

अरहंत जनमंग हर दर्श लीना वैजंत नानक तैं शब्द बीना।

मेरा जन्म–मरण कट गया, मैंने वहां शब्द की बीन जैसी आवाज सुनी।

सुनी अलख अगम की बतियाँ। शशि सूर खरब जहाँ थकियाँ।।

अब कहते हैं कि मैं आगे अलख और अगम देश में चला गया। यहां के हजारों–करोड़ों सूरज–चंद्रमा इकट्ठे करें तो भी वहां के प्रकाश का मुकाबला नहीं कर सकते।

पिया परसे राधास्वामी। कुछ कहूं न पुरुष अनामी।।

अब कहते हैं कि आत्मा उस परमात्मा से मिलकर परमात्मा हो गई है। मैं वहां की क्या महिमा बयान कर सकता हूं?

मेरी आरत सब से न्यारी। कोइ समझेगी पिया प्यारी ।।

अब कहते हैं कि मेरी आरती दुनिया से न्यारी है क्योंकि कोई पहुंची हुई आत्मा ही मुझे समझ सकती है। दादू साहब कहते हैं:

वेद न भेद भेख नहिं जानत, कोऊ देत ना हामी।

वेद दूसरी मंजिल का ही बयान करते हैं क्योंकि वेदों को भी पता नहीं, वेश बाहर ही बाहर रह गए। लोग यह भी नहीं कहते कि दादू जो कुछ आप कह रहे हैं वह ठीक है।

यह भेद अथाह बखाना। बिन संत ना कोई जाना।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि मैं जो कुछ बयान करता हूं सुना–सुनाया नहीं करता, आँखों से देखा हुआ ही बयान करता हूं। जो सन्त–महात्मा यहां पहुंच जाते हैं वे ही इसकी हामी भर सकते हैं।

करमी जीव जग के अंधे। सब फँसे काल के फँदे।।

बाहर का रस्मों–रिवाज छिलका है। जो लोग बाहर रस्मों–रिवाज में उलझे हुए हैं, बाहरमुखी कर्मकांड करते हैं वे छिलके में फंसे हुए हैं। छिलके की क्या कीमत है? मूल्य गिरी का ही होता है। धार्मिक कानून को मानने वाले बेचारे लोग बाहर रहने–सहने में ही सारी जिंदगी लगा देते हैं। अगर हम सारी जिंदगी बर्तन साफ करते रहें और उसमें कोई वस्तु न डालें तो उसका क्या फायदा? धार्मिक कानून हमें दुनिया के अंदर रहना–सहना सिखाते हैं, ये अच्छे हैं करने चाहिए लेकिन मुक्ति नाम में ही है।

उन से नहिं कहना चहिये। मत गूढ़ छिपाये रहिये।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि शरिअत के कैदी शरिअत को नहीं छोड़ सकते, हमें उनके साथ लड़ना–झगड़ना नहीं चाहिए। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर कोई रुपए का व्यापार बताने पर गुस्सा करे तो उसे क्यों बताया जाए?''

आपको 'शब्द–नाम' का भेद मिला है, आप कमाई करें। जरूरी नहीं कि सब लोग इस तरफ आएँ। कमाई वाले महात्मा को यह भूख नहीं होती कि मेरे ज्यादा शिष्य हों, उन्होंने आर्मी नहीं खड़ी करनी होती। वे तो एक प्रेमी की तलाश में होते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हजारों डांवाडोल शिष्यों से एक मजबूत शिष्य ही काफी होता है।'' कबीर साहब कहते हैं, ''वे पाखंडी होते हैं जो ये कहते हैं कि हमसे दीक्षा लें।''

गुरुआ तो घर–घर फिरे दीक्षा हमरी लो।

शेख सिलवी के पास दो आदमी कलमा लेने के लिए आए। शेख सिलवी ने कहा एक–एक करके आओ। जो आदमी पहले आया उससे शेख सिलवी ने कहा, ''*ला इलाहा लिल्लाह सिलवी रसूललिल्लहा।*'' उसने कहा, ''तौबा– तौबा।'' शेख सिलवी ने भी 'तौबा–तौबा' कहा और उस आदमी से पूछा कि तूने 'तौबा–तौबा' क्यों की? उस आदमी ने कहा, ''मैंने तौबा–तौबा इसलिए की कि तू एक मामूली जीव है, तू किस तरह मोहम्मद साहब के बराबर हो सकता है? फिर उस आदमी ने शेख सिलवी से पूछा कि आपने 'तौबा–तौबा' क्यों की?'' शेख सिलवी ने कहा, ''मैं तेरे मैले हृदय के अंदर परमात्मा को बैठाने लगा था, तुझे बहुत बड़ी संपत्ति देने लगा था। बना बनाया राम ही तेरे अंदर बैठाने लगा था लेकिन मैं तेरे कर्म उठाने से बच गया इसलिए मैंने 'तौबा–तौबा' की।

जब दूसरा आदमी आया तो शेख सिलवी ने उससे कहा, ''*ला इलाहा लिल्लाह मोहम्मद रसूललिल्लहा* ।'' उस आदमी ने कहा, ''ठहर जाएं! मैं तो आपको कुल मालिक समझकर आया था कि गुरु और मालिक में कोई फर्क नहीं अगर आप भी पैगंबर का दर्जा रखते हैं तो मैं आपसे कलमा नहीं लूंगा।'' शेख सिलवी ने उस आदमी से कहा मैंने तुम्हें परखने के लिए यह बात कही थी, अब मैं तुम्हें परमात्मा के साथ जोड़ दूँगा।

शेख सिलवी ने पहले वाले आदमी से कहा,''तू किसी मस्जिद के मौलवी के पास जा, तेरे लिए वही ठीक रहेगा।'' महात्मा जब भी आते हैं वे हमें परमात्मा के साथ जोड़ते हैं, किसी को जबरदस्ती नाम नहीं देते।

सुर्त शब्द कमाई करना। सुमिरन में तन मन देना।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''सुरत–शब्द का अभ्यास करना है और सिमरन के जरिए आत्मा को तन से निकालकर आंखों के पीछे लाना है।''

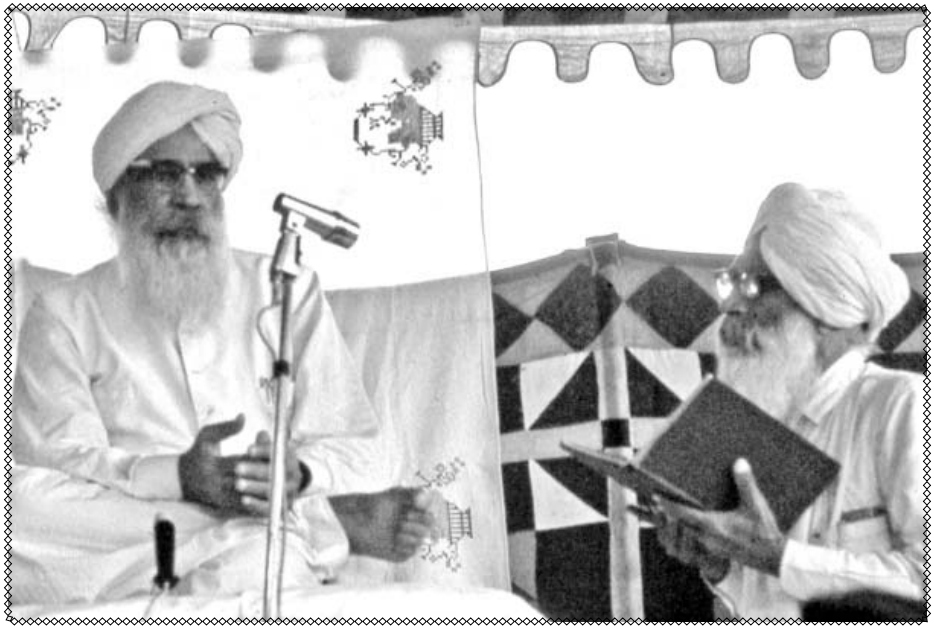

गुरु दर्शन बहुत निरखना। धुन अनहद नित परखना।।

आप कहते हैं कि जब गुरु का दर्शन मिलता है तो बहुत प्यार के साथ उसे आंखों में बसाएँ और उस शब्द–धुन को रोज सुनें।

सतसंग की चाहत रखना। जब डौल बने तब करना।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि दिल में सतसंग की लगन रखनी है, जब मौका मिले सतसंग जरूर करना है। हुजूर महाराज जी कहा करते थे, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं, हजार काम छोड़कर भजन पर बैठें।''

उपदेश किया यह टीका। राधास्वामी नाम मैं सीखा।।

स्वामी जी महाराज बहुत प्यार से इस शब्द को समझाते हुए कहते हैं कि मैंने आपको सन्त–महात्माओं का संसार में आने का मिशन समझा दिया है। आप 'शब्द–नाम' की कमाई करें, अपने जीवन को सफल करें।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को विदाई के समय दिया संदेश

डायरी की महानता

07 फरवरी 1991 16 पी. एस. राजस्थान

अमली को अमल से प्यार होता है, जुएबाज़ को जुए से प्यार होता है। अब यह सतसंग का कार्यक्रम समाप्त है। मैंने कई दिन आपके बीच बैठकर बहुत खुशी महसूस की। जो अभ्यास करते हैं, मालिक की भक्ति करते हैं, मेरा उनसे अटूट प्यार है। दुनिया विषय–विकारों की आग में जल रही है। मैंने आपके साथ बैठकर प्रभु की याद में जो समय बिताया है, मैं उस घड़ी को बहुत भाग्यशाली समझता हूँ और अपने गुरु का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने हमें इंसानी जामें में अपनी भक्ति का दान दिया।

मैं आशा करता हूँ कि आप लोग पाँच–छः दिन से जो सुन रहे हैं, जो कुछ अभ्यास में प्राप्त कर रहे हैं, इसे तभी क़ायम रख सकते हैं अगर घर जाकर, घर की ज़िम्मेदारियों को निभाते हुए अपना अभ्यास जारी रखेंगे।

महाराज जी ने डायरी पर बहुत जोर दिया है। अपने–अपने ज़माने के मुताबिक डायरी पर सारे ही गुरुओं ने बहुत जोर दिया है, डायरी एक किस्म का रोज़नामचा है। सुबह से अपनी जांच–पड़ताल करनी है कि मैं कहाँ तक पहुँचता हूँ। मै क्या देखता हूँ। मैं कितने पाप–पुण्य करता हूँ। मैंने किसकी कितनी निंदा की, मैंने धन से किसका फ़ायदा–नुकसान किया? अंदर कितनों के लिए बुरा सोचा है? हमने शाम को बैठकर मन से बेलिहाज़ होकर डायरी को भरना है।

गुरु रामदास जी और गुरु अमर देव जी के वक्त में भी यही संदेश था लेकिन तब किसी और ढंग से था। आज जनता थोड़ा बहुत पढ़ चुकी है पर अभी भी गाँवों में इतनी जनता पढ़ी हुई नहीं है। महाराज जी ने एक औरत को डायरी दी, उसने घर जाकर डायरी को अलमारी में ऊँची जगह पर

रख दिया। वह रोज डायरी को धूप–अगरबत्ती किया करे उसके आगे घी की जोत जगाया करे। एक दिन जब वह औरत महाराज जी के सामने आई तो उन्होंने पूछा क्या डायरी रखती है? उस औरत ने कहा हाँ जी, मैंने डायरी संभाल कर ऊँची जगह पर रखी हुई है, रोज़ उसे धूप–अगरबत्ती देती हूँ। हमने इस तरह रोज धूप करने पर ज़ोर नहीं देना, हमने डायरी में लिखना है कि हम दिन भर क्या कुछ करते हैं।

गुरु रामदास जी के समय में जो सेवक सतसंग में आते थे, वे खड़े होकर बताते थे कि मैंने कितने पाप किए हैं। जिसने ऐब छोड़ने होते थे वे ऐसा कर लेते थे। मैं आज भी देखता हूँ कि हजारों अंग्रेज बैठे होते हैं अगर किसी से कोई बुराई हो जाती है तो वह बंदा उठकर अपने मुँह पर थप्पड़ मारता है और कहता है, ''मैं आपका नहीं बना, जब आपका ही नहीं बना तो किसका बनूँगा? मुझसे बुराई हो गई है।'' सन्त यह भी नहीं पूछते कि तूने क्या बुराई की है? सन्त कहते हैं, ''आगे से मत करना।''

गुरु गोबिंद सिंह जी रूपनगर के इलाके में गए, उन्होंने पूछा कि इस गाँव का क्या नाम है? उस गाँव के लोगों ने बताया कि इसे चोरों का गाँव कहते हैं। गुरु साहब ने पूछा कि आपके गाँव को चोरों का गाँव क्यों कहते हैं? उन लोगों ने कहा कि यहाँ के सारे लोग चोरी करते हैं अगर कोई यह काम न अपनाए तो हम उसे अच्छा नहीं समझते।

गुरु साहब ने कहा कि तुम लोगों ने यह भी सोचा है कि तुम लोग जिसका माल चुराकर लाते हो, वह तुमसे कितना खफ़ा होगा, तुम्हें कितनी बद्दुआएँ देता होगा? क्या तुम नर्कों की तैयारी नहीं कर रहे हो? उन लोगों ने कहा, ''हमने आपकी बातें सतसंग में सुनी हैं, उन्हें सुनकर तो हम काँपते हैं लेकिन यह आदत बन चुकी है, अब हमसे छुटेगी नहीं।''

गुरु साहब ने कहा कि तुम लोग डायरी रखो। उन लोगों ने कहा कि हम अनपढ़ हैं। सन्तों के अपने ही तरीके होते हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी ने

कहा, ''तुम लोग ऐसा करो कि जब कोई पाप हो जाए तो एक कंकड़ उठाकर एक जगह पर जमा कर दो। शाम को गिनना कि कितने कंकड़ जमा हो गए।'' उन लोगों ने जब ऐसा किया तो वहाँ ढेर लग गए। उन लोगों के दिल में ख्याल आया कि हम इतने पापों का हिसाब कैसे देंगे? कितना अच्छा हो कि हम यह प्रण करें कि अब हम न पाप करें न कंकड़ इकट्ठे हों। जब गुरु साहब आएंगे तो हम सच्चे दिल से उनके आगे कबूल करेंगे।

जब गुरु गोबिंद सिंह जी ने फिर वहाँ आकर अपना सतसंग लगाया, उनसे पूछा, ''क्यों भाई प्यारेयो, कोई हिसाब–किताब रखा?'' उन लोगों ने कहा, ''हाँ जी, एक दिन हिसाब रखा था, इतने ढेर लग गए फिर हम सबने बैठकर ये प्रण किया और आपके आगे यह प्रण करते हैं कि अब हम ये पाप नहीं करेंगे।'' एक मामूली इशारे से गुरु गोबिंद सिंह जी ने उन लोगों के ऐब छुड़वा दिए।

प्यारेयो, आपने जो कुछ भी यहाँ सतसंग में सुना है, अपने घरों में जाकर नाम की कमाई करनी है। सब प्रेमियों ने मिलकर यहाँ सतसंग का प्रबंध किया, प्रबंधकों से कभी कोई गलती भी हो जाती है उसके लिए हम सबसे माफी माँगते हैं। मैं देखता रहा हूँ कि जिन प्रेमियों ने मिलकर ज्यादा से ज्यादा सेवा की है और जिन्होंने बैठकर नाम जपा है, मैं उन सबका धन्यवादी हूँ।

मैं आशा करता हूँ कि आप लोगों ने यहां सतसंग में जो कुछ सुना है और अभ्यास में जो प्राप्त किया है, उसे अपने घर जाकर अभ्यास करके कायम रखेंगे।

***

सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी

धन्य अजायब

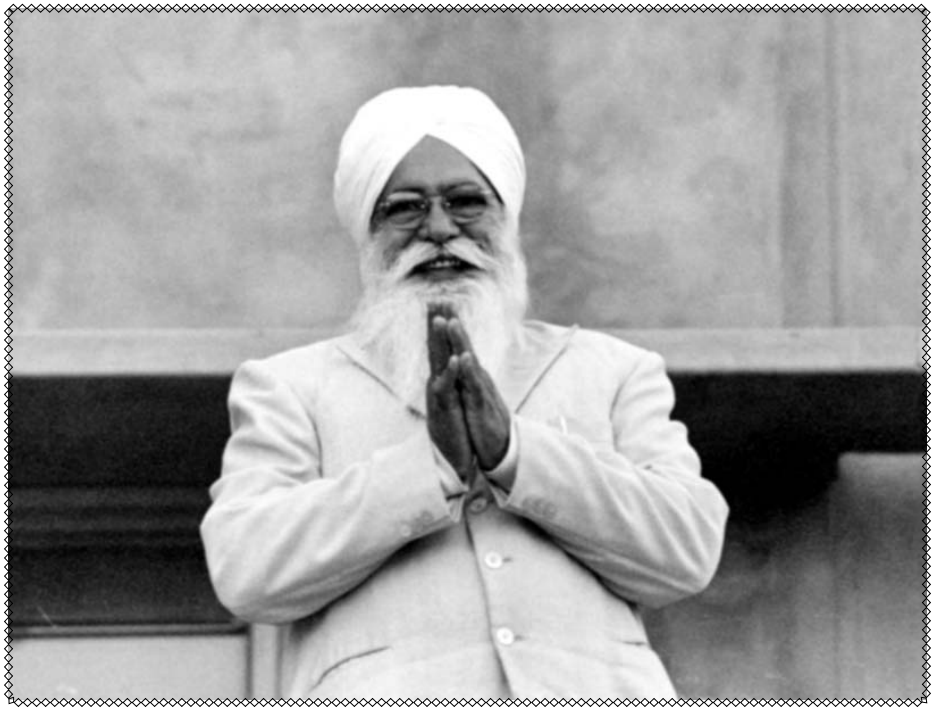

सन्तबानी आश्रम 16 पी. एस. रायसिंह नगर (श्री गंगानगर) में सतसंग के कार्यक्रम

07 से 12 सितम्बर	2023
29, 30 सितम्बर व 01 अक्टूबर	2023
03, 04 व 05 नवम्बर	2023
01, 02 व 03 दिसम्बर	2023

RNI No - RAJHIN/2003/9899
Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2023-2025
Published on 08th Sept. 2023
Posting at RMS, Sri Ganganagar on 10th or 11th Sept. 2023

गुरु की पोजिशन और गुरु की दया का पता अंदर जाकर लगता है। वहां आत्मा जब अदभुत सुख देखती है तो उसे शांति आ जाती है। उस वक्त गुरु की महिमा याद आती है कि ओह! न गुरु ने मुझसे कोई फीस ली, न दुनिया ही छुड़ाई। गुरु ने मेरे ऊपर इतनी दया–मेहर की कि मैं यह सुख प्राप्त कर सकी।